कक्षा 11 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

11091

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी
Board of School Education Haryana, Bhiwani

मूल संस्करण :
© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधांन और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

अभिगृहित :
© हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

संस्करण : **2020**

संख्या : **5,000 प्रतियाँ**

मुल्य : **₹180/-**

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण और प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनविक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

आभार प्रदर्शन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने इस पुस्तक को छापने तथा हरियाणा के विद्यालयों में इसे पाठ्य–पुस्तक के रूप में पढ़ाने की अनुमति हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी को प्रदान करने की कृपा की है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी इसके लिए उनका हृदय से आभार प्रकट करता है।

सचिव

टैक्स्ट 80 जी॰एस॰एम॰ डी एस जी पेपर मिल और कवर 170 जी॰एस॰एम॰ विशाल पेपर मिल के कागज पर मुद्रित।

सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी द्वारा प्रकाशित एवम् एस जी प्रिण्ट पैक्स प्रा॰ लि॰, नोएडा–201301, उ॰प्र॰ द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के *अध्यक्ष*, प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन, इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के *मुख्य सलाहकार*, प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य एवं *सलाहकार*, प्रोफ़ेसर नारायणी गुप्ता की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया;

इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 दिसंबर 2005

विश्व इतिहास का अध्ययन

आप सोच रहे होंगे कि एक ही वर्ष के अंदर विश्व इतिहास का अध्ययन कैसे संभव है? आखिर, विश्व के विभिन्न देशों में इतना कुछ हुआ और प्रत्येक देश के बारे में इतना कुछ लिखा जा चुका है। इतने विस्तृत व असीम संग्रह से कुछ विषयों को ही हम अध्ययन के लिए कैसे चुन सकते हैं?

ये जायज़ सवाल हैं। विश्व इतिहास पर किसी पुस्तक को पढ़ने से पहले हमें इन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहिए। किसी भी पाठ्यक्रम से यह स्पष्ट होना चाहिए कि उसकी रचना किस प्रकार हुई है। इसी तरह से एक किताब से यह साफ़ होना चाहिए कि उसके क्या उद्देश्य हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि इतिहास के अध्ययन अथवा लेखन में इतिहासकार सदैव तरह-तरह के चयन करता है। कई दशकों पहले ई.एच. कार ने इसी बात को अपनी उत्कृष्ट पुस्तक *इतिहास क्या है* में उठाया है। किसी पुराने अभिलेखागार में दस्तावेज़ों के ढेरों की जाँच-पड़ताल कर इतिहासकार उन तथ्यों को नोट करता है जो उसे महत्त्वपूर्ण जान पड़ते हैं। वह अन्य जगहों के अभिलेखागारों से प्रमाण एकत्रित करता है और विभिन्न प्रमाणों व तथ्यों में अंतर्संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। न तो वह उन सभी चीज़ों को उतार सकता है जिसे उसने पढ़ा है और न ही वह हर प्रमाण का प्रयोग कर सकता है। जो प्रमाण उसे महत्त्वपूर्ण नहीं लगते उन्हें वह छोड़ देता है। बाद में कोई अन्य इतिहासकार उन्हीं स्रोतों को नए प्रश्नों के साथ पढ़ता है। नए इतिहासकार को अब कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिन्हें पहले अनदेखा कर दिया गया था। वे इन प्रमाणों की व्याख्या करती हैं, नए अंतर्संबंध कायम करती है और इस तरह से इतिहास की एक नयी किताब लिख डालती हैं।

चयन की यह प्रक्रिया इतिहास लेखन में अंतर्निहित रही है। इसलिए इतिहास पढ़ते समय यह देखना आवश्यक है कि इतिहासकार कैसी घटनाओं के बारे में लिख रहा है तथा कैसे उनकी व्याख्या कर रहा है। हमें इतिहासकार के प्रमुख तर्क और उसकी सोच के ढाँचे को जानना जरूरी है जिसके जरिए वे किन्हीं विशेष घटनाओं को समझता है।

हाल तक हम जो इतिहास पढ़ते आए हैं आमतौर पर वह आधुनिक पश्चिम के उदय की कहानी रही है। यह कहानी निरंतर प्रगति और विकास की थी: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बाज़ार व व्यापार, तर्क तथा तर्कणावाद, आज़ादी और स्वतंत्रता के विस्तार की। अक्सर किन्हीं विशेष घटनाओं का इतिहास पश्चिम की विजयी यात्रा की बड़ी कहानी का ही हिस्सा था। समस्त विश्व में साम्राज्यवादी प्रभुत्व अतीत की इसी अवधारणा पर आधारित था। पश्चिम अपने को इस प्रगति का अग्रदूत मानता था। वह यह मानता था कि विश्व को सभ्य बनाना, सुधार करना व करवाना, विभिन्न देशों के मूल निवासियों को शिक्षित करना, व्यापार व बाज़ारों का विस्तार करना उसकी ख़ास ज़िम्मेवारी है।

क्या आज हमें इस समझ के बारे में प्रश्न नहीं उठाने चाहिए? ऐसा करने के लिए हमें विश्व इतिहास को फिर से देखना होगा। कई महाद्वीपों और लम्बे ऐतिहासिक कालों का सफर करते हुए हमें यह सोचना होगा कि विश्व इतिहास को नए तरीके से देखा जा सकता है। इस यात्रा में *विश्व इतिहास के कुछ विषय* आपकी मदद करेगी।

ऐसा यह तीन तरीकों से करेगी।

सबसे पहले यह पुस्तक विकास और प्रगति की महान कहानियों के पीछे छुपे ज़्यादा 'अँधेरे' इतिहासों से आपका परिचय कराएगी। आप देखेंगे कि कैसे पंद्रहवीं, सोलहवीं शताब्दियों में दक्षिण अमरीका में अन्वेषकों और व्यापारियों के आगमन ने केवल पश्चिमी वाणिज्य और संस्कृति के लिए अपने द्वार ही नहीं खोले बल्कि इससे वहाँ विभिन्न तरह की बीमारियाँ फैलीं, सभ्यता का विनाश हुआ और आबादियों का खात्मा हो गया (विषय 8)। बाद में उत्तरी अमरीका व ऑस्ट्रेलिया में गोरों के बसने का परिणाम केवल प्रगति नहीं (विषय 10) रहा। इन स्थानों में आधुनिक पूँजीवादी विकास के इतिहास के पीछे मूल निवासियों के विस्थापन व जन-संहार की भयानक कहानियाँ हैं।

फिर जब आप अनुभाग दो में राज्यों व साम्राज्यों के निर्माण के बारे में पढ़ेंगे तो पाएँगे कि वह कहानी केवल रोम (विषय 3) यानि कि यूरोप की नहीं है बल्कि मध्य इस्लामिक राज्यों (विषय 4) एवं मंगोलों के क्षेत्रों की (विषय 5) भी है। इन अध्यायों से आपको पता चलेगा कि इन जगहों पर समाज व राजनीतिक व्यवस्था अलग ढंग से संगठित थी।

यह पुस्तक अनुभाग चार में आधुनिकीकरण के विभिन्न रास्तों के बारे में भी आपको बताएगी। आप जानते होंगे कि औद्योगीकरण सबसे पहले ब्रिटेन में हुआ। एक ज़माने में यह माना जाता था कि अन्य देशों ने विभिन्न तरीकों से ब्रिटिश मॉडल का ही अनुकरण किया। इसलिए अन्य देशों में औद्योगीकरण से जुड़े विकास को ब्रिटिश मॉडल के हिसाब से ही परखा जाता रहा। ऐसा तर्क फिर से पश्चिम को विश्व केंद्र के रूप में देखता है। लेकिन आज हम यह जानते हैं कि सारी रचनात्मकता पश्चिम से ही नहीं आई। दूसरी ओर यह कहना भी उचित नहीं होगा कि विश्व घटनाओं पर पश्चिम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, या फिर प्रत्येक देश के इतिहास को अलग-थलग कर देखना चाहिए, या फिर हमें विकास की देशज जड़ों का ही परीक्षण करना चाहिए। ऐसा परिप्रेक्ष्य सीमित होगा और यह एक तरह की संकीर्णता पैदा करेगा। इसकी जगह हमें यह जानना आवश्यक है कि विभिन्न देशों में लोग अपनी दुनिया बनाने के लिए रचनात्मक तरीकों से काम करते रहे हैं और इन क्रियाकलापों का प्रभाव अन्य देशों और यूरोप सहित अन्य महाद्वीपों पर पड़ा है। विषय सात में आप देखेंगे कि पुनर्जागरण युगीन यूरोप की सांस्कृतिक गतिविधियों पर दुनिया के अन्य देशों में होने वाली घटनाओं का भी बहुत प्रभाव पड़ा।

इस पुस्तक में आपकी यात्रा आरंभिक मानव समाज (विषय 1) तथा आरंभिक नगरों (विषय 2) के विकास से शुरू होगी। आप फिर देखेंगे कि दुनिया के तीन अलग हिस्सों में कैसे बड़े राज्य-साम्राज्य विकसित हुए और इनको कैसे संगठित किया गया (अनुभाग दो)। अगले अनुभाग में आप देखेंगे कि कैसे नौवीं व पंद्रहवीं शताब्दियों के बीच यूरोपीय समाज व संस्कृति में बदलाव आया और, दक्षिणी अमरीका के लोगों के लिए यूरोपीय विस्तार का क्या अर्थ (अनुभाग तीन) था। अंततः आप आधुनिक विश्व के जटिल निर्माण का इतिहास पढ़ेंगे (अनुभाग चार)। आपको ये सभी अध्याय इन विषयों के विवादों से परिचित करवाएँगे ताकि आप समझ सकें कि इतिहासकार पुराने मुद्दों पर कैसे निरंतर पुनर्विचार करते रहते हैं।

प्रत्येक अनुभाग एक परिचय व कालरेखा से शुरू होता है। परीक्षा के लिए इन तिथिक्रमों को याद रखना ज़रूरी नहीं है। इनके द्वारा यह बताया गया है कि एक खास समय पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में क्या हो रहा था। इनसे आपको विभिन्न जगहों के सापेक्षिक इतिहास को जानने में मदद मिलेगी।

कालरेखाएँ बनाना एक कठिन काम है। किसी भी कालरेखा में हम किन तिथियों को शामिल करते हैं? इस पर हमेशा इतिहासकार एकमत नहीं रहे हैं। वास्तव में अगर आप एक ही काल से संबंधित विभिन्न पुस्तकों में दिए गए तिथिक्रमों की तुलना करें तो आप शायद पाएँगे कि उन सभी के मुख्य मुद्दे भिन्न हैं। इसलिए हमें प्रत्येक तिथिक्रम को आलोचनात्मक ढंग से पढ़ना चाहिए। हमें यह देखना चाहिए कि कोई भी तिथिक्रम हमें क्या बताता है और क्या नहीं बताता है। कालरेखाएँ विशिष्ट रूप से इतिहास की रूपरेखा निर्धारित कर देती हैं।

इस वर्ष आप दक्षिण एशिया के इतिहास के बारे में नहीं पढ़ रहे हैं। अगले वर्ष की पुस्तक भारतीय इतिहास से जुड़े विषयों पर होगी। इन वर्षों (कक्षा 11 व 12) में आप विश्व इतिहास की निर्णायक घटनाओं और प्रक्रियाओं के बारे में ही नहीं बल्कि ये भी जानेंगे कि इतिहासकार अतीत के बारे में अपनी समझ कैसे बनाते हैं? आप देखेंगे कि वे किन स्रोतों का प्रयोग करते हैं और उन्हें कैसे समझते हैं। आप यह भी जानेंगे कि ऐतिहासिक ज्ञान विवादों व पुनर्व्याख्याओं के द्वारा कैसे बनता है।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार, इतिहास

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, समाज विज्ञान संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सलाहकार

नारायणी गुप्ता (*अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर*), इतिहास विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नयी दिल्ली (विषय 10)

सदस्य

अरूप बनर्जी, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 9)

अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

चित्रा श्रीनिवासन, *वरिष्ठ अध्यापिका,* सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

जयरस वाणाजी, *विजिटिंग प्रोफ़ेसर,* जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 3)

नजफ़ हैदर, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 4)

बीबा सोब्ती, *वरिष्ठ अध्यापिका,* मॉडर्न स्कूल, नयी दिल्ली

ब्रिज तंखा, *प्रोफ़ेसर,* पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 11)

भास्कर चक्रवर्ती, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता (विषय 7)

रजत दत्त, *प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 6)

रीतू सिंह, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

लक्ष्मी सुब्रमण्यम, *प्रोफ़ेसर,* पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र, कोलकाता (विषय 8)

सुनील कुमार, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली (विषय 5)

सुप्रिया वर्मा, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद (विषय 1)

शीरीन रत्नागर (*अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर*), इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली (विषय 2)

हिंदी अनुवाद

अनिल सेठी, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

परशुराम शर्मा, *भूतपूर्व निदेशक* (राजभाषा), भारत सरकार

प्रत्यूष कुमार मंडल, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

राजेन्द्र प्रसाद तिवारी (*अवकाशप्राप्त अनुसंधान अधिकारी*), इतिहास एवं पुरातत्त्व, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली

रीतू सिंह, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

संजीव कुमार, हिंदी विभाग, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सीमा एस. ओझा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक लोगों ने उसके अध्यायों को पढ़कर, चित्र एवं लेखन सामग्री प्रदान कर, उसकी बनावट और सज्जा की कल्पना करने में और उसके अनुवाद और कॉपी संपादन में सहयोग दिया है।

कुमकुम रॉय ने इस पुस्तक के बनने की प्रक्रिया में अनेक रूपों में मदद की है। निहारिका गुप्ता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया और साहित्यिक संदर्भ बताए। पुस्तक के विशिष्ट अध्यायों पर अपनी टिप्पणियों के लिए हम एलन माएने, डॉन ओ कॉनर, जया मेनन, पार्थो दत्ता, पीटर मेयर और फिलिप ओलडनबर्ग के आभारी हैं। हम प्रीति गुप्ता दीवान, बजरंग बिहारी तिवारी, शिखा सेठी, संजय शर्मा, अरुणा बेरी, योगेन्द्र दत्त और उमेश के भी आभारी हैं जिन्होंने हिंदी पाण्डुलिपि के पुनरावलोकन में सहयोग दिया। कुसुम बाँठिया को हम विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अनुवाद से जुड़ी अनेक नाजुक समस्याओं को पल में हल किया।

इस पुस्तक के मानचित्रों के निर्माण में सहायता करने के लिए हम देविका सेठी के आभारी हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में अखिला यैचुरी, अनीष विनायक, दीपाश्री बॉल, निहारिका गुप्ता, पल्लवी राघवन व पार्थ शील के योगदान के लिए हम उन्हें विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं।

पाठ्यपुस्तक के वर्तमान संस्करण में 'कोरिया की कहानी' शीर्षक से एक खंड जोड़ा गया है। इसके मूल लेख एवं चित्रों के लिए हम सेंटर फ़ॉर इंटरनेशनल अफ़ेयर्स, दि एकेडमी ऑफ़ कोरियन स्टडीज़, सिओल, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया के ली वार बोम, प्रोफ़ेसर ऑफ़ पॉलीटिक्स, और चो यंग जुन, प्रोफ़ेसर ऑफ़ इकोनॉमिक्स के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त, इस खण्ड का हिंदी में अनुवाद करने के लिए हम डॉ. नीरजा समाजदार, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सेंटर फ़ॉर कोरियन स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली के भी आभारी हैं।

परिषद् की ओर से *डी.टी.पी. ऑपरेटर* अरविंद शर्मा, विजय कुमार तथा *कॉपी एडिटर* विजय कुमार शर्मा, विभूति नाथ झा तथा *प्रूफ रीडर* सीमा यादव ने अपना पूर्ण योगदान दिया। इतने कम समय में काम पूरा कर देने और पूरी परियोजना में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए हम इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

चित्रों के लिए आभार

विलियम ए. टर्नबॉग, रॉबर्ट जरमेन, लिन किलगोर, हैरी नेलसन, *अंडरस्टैंडिंग फिज़िकल ऐंथ्रोपोलॉजी एंड आर्किओलॉजी*, वैड्स्वर्थ/थॉमसन लर्निंग, बेलमॉन्ट, 2002 (पृष्ठ 1,9,11,19 और 28 के चित्रों के लिए)

जे. बोर्डमैन, जे. ग्रिफिन, ओ. मर्रे, *ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ दि क्लासिकल वर्ल्ड,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991 (पृष्ठ 61, 63, 66 और 69 के चित्रों के लिए)

बारबारा ब्रेंड, *इस्लामिक आर्ट,* ब्रिटिश म्यूज़ियम प्रेस, 1991 (पृष्ठ 80 और 96 के चित्रों के लिए)

बर्नार्ड लेविस, *इस्लाम*, टेम्स एंड हडसन, 1992 (पृष्ठ 79, 91, 92 और 97 के चित्रों के लिए)

एम. हट्सटाइन और पी. डेलियस (संपादित), *इस्लाम: आर्ट एंड ऑर्किटेक्चर*, कोनमैन, 2000 (पृष्ठ 90, 95, 100, 101, 121 के चित्रों के लिए)

पी. गे एवं टाइम-लाइफ पुस्तकों के संपादक, *एज ऑफ एनलाइटेनमेंट,* एम्स्टरडैम, 1985 (पृष्ठ 186 व 187 के चित्रों के लिए)

पी.बी. एब्री, *दि केम्ब्रिज इलस्ट्रेटेड हिस्ट्री ऑफ चाइना,* केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996 (पृष्ठ 244 के चित्रों के लिए)

जोनाथन डी. स्पेंस, *दि सर्च फॉर मॉडर्न चाइना,* सेंचुरी हचिन्सन, 1990 (पृष्ठ 247, 250 और 252 के चित्रों के लिए)

जे. कोलटन व टाइम-लाइफ पुस्तकों के संपादक, *ट्बेन्टीएथ सेंचुरी*, एम्स्टरडैम, 1985 (पृष्ठ 186 व 187 के चित्रों के लिए)

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, प्रिंट्स एवं फोटोग्राफ्स प्रभाग, वॉशिंगटन डी.सी. (पृष्ठ 224, 139 के चित्रों के लिए)

नेशनल जिओग्राफिक, दिसंबर 1996, फरवरी 1997 (पृष्ठ 108, 110, 113, 116, 121 के चित्रों के लिए)

विषय सूची

आमुख ______ *iii*

प्रस्तावना ______ *v*

अनुभाग एक – प्रारंभिक समाज

भूमिका ______ 2

कालक्रम एक – (6 लाख वर्ष पूर्व से 1 ई.पू.) ______ 4

विषय 1: समय की शुरुआत से ______ 8

विषय 2: लेखन कला और शहरी जीवन ______ 29

अनुभाग दो – साम्राज्य

भूमिका ______ 50

कालक्रम दो – (लगभग 100 ई.पू. से 1300 ईसवी) ______ 54

विषय 3: तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य ______ 58

विषय 4: इस्लाम का उदय और विस्तार–लगभग 570-1200 ई. ______ 77

विषय 5: यायावर साम्राज्य ______ 104

अनुभाग तीन – बदलती परंपराएँ

भूमिका ______ 124

कालक्रम तीन – (लगभग 1300-1700) ______ 128

विषय 6: तीन वर्ग ______ 132

विषय 7: बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएँ ______ 152

विषय 8: संस्कृतियों का टकराव ______ 168

अनुभाग चार – आधुनिकीकरण की ओर

भूमिका ______ 186

कालक्रम चार – (लगभग 1700-2000) ______ 189

विषय 9: औद्योगिक क्रांति ______ 196

विषय 10: मूल निवासियों का विस्थापन ______ 213

विषय 11: आधुनिकीकरण के रास्ते ______ 231

निष्कर्ष ______ 260

एक

प्रारंभिक समाज

समय की शुरुआत से

लेखन कला और शहरी जीवन

प्रारंभिक समाज

इस अनुभाग में, हम प्रारंभिक समाजों से संबंधित दो विषयों के बारे में पढ़ेंगे। पहला विषय सुदूर अतीत में, लाखों साल पहले, मानव अस्तित्व की शुरुआत के बारे में है। उसमें आप यह पढ़ेंगे कि सर्वप्रथम अफ़्रीका में मानव प्राणियों का प्रादुर्भाव कैसे हुआ और पुरातत्त्व विज्ञानियों ने इतिहास के इन प्रारंभिक चरणों के बारे में, हड्डियों और पत्थर के औज़ारों के अवशेषों की सहायता से, कैसे अध्ययन किया।

पुरातत्त्व विज्ञानियों ने आरंभिक मानव के जीवन के बारे में पुनर्निर्माण करने के प्रयत्न किए हैं। उन्होंने यह जानने की कोशिश की है कि वे कैसे घरों में रहते थे, वे पेड़-पौधों से उत्पन्न कंदमूल एवं बीजों को इकट्ठा करके और जानवरों का शिकार करके अपना भरण-पोषण कैसे करते थे और वे किन तरीकों से अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करते थे। आप यह भी पढ़ेंगे कि आदमी द्वारा आग और भाषा का प्रयोग कब और कैसे शुरू हुआ और अंत में आप यह देखेंगे कि आज की दुनिया में भी जो लोग शिकार और पेड़-पौधों से प्राप्त खाद्य-सामग्रियों से अपना भरण-पोषण करते हैं क्या उनके जीवन का अध्ययन करने से अतीत के बारे में जानकारी मिल सकती है।

दूसरे विषय में कुछ प्रारंभिक नगरों जैसे- मेसोपोटामिया (वर्तमान इराक) के कुछ शहरों के बारे में चर्चा की गई है। इन नगरों का विकास मंदिरों के आस-पास हुआ था। ये नगर सुदूर व्यापार के केंद्र थे। पुरातात्त्विक साक्ष्यों यानी पुरानी बस्तियों के अवशेषों और बहुतायत से पाई जाने वाली लिखित सामग्रियों के आधार पर उस समय के भिन्न-भिन्न लोगों - शिल्पियों, लिपिकों, श्रमिकों, पुरोहितों, राजा-रानियों आदि के जीवन के पुनर्निर्माण का प्रयत्न किया गया है। आप यह भी देखेंगे कि इनमें से शहरों तथा कस्बों में पशुचारक समुदाय के लोग अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका कैसे निभाते थे। एक विचारणीय प्रश्न यह है कि यदि लेखन कला का विकास नहीं हुआ होता, तो इन शहरों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ कैसे संभव होतीं?

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लाखों वर्षों तक जंगलों, गुफ़ाओं अथवा कामचलाऊ घरों-आसरों तथा शिलाश्रयों में रहने वाले इनसानों ने आगे चलकर गाँवों और शहरों में रहना कैसे शुरू किया। यह एक लंबी कहानी है और ऐसी अनेक घटनाओं से जुड़ी है जो सर्वप्रथम नगरों की स्थापना से कम-से-कम पाँच हज़ार वर्ष पहले घटित हुई थी।

अत्यंत दूरगामी प्रभाव डालने वाले परिवर्तनों में से एक था: धीरे-धीरे खानाबदोश ज़िंदगी को छोड़कर खेती के लिए एक स्थान पर बस जाना, जो लगभग दस हज़ार साल पहले शुरू हो गया था। जैसा कि आप आगे विषय एक में देखेंगे, खेती अपनाने से पहले, लोग अपने भोजन के

लिए पेड़-पौधों की उपज इकट्ठी किया करते थे। धीरे-धीरे उन्होंने भिन्न-भिन्न पौधों के बारे में जानकारी प्राप्त की; जैसे- वे कहाँ उगते हैं, वे किस मौसम में फलते हैं, आदि-आदि। इस जानकारी के आधार पर उन्होंने पौधे उगाना सीख लिया। पश्चिमी एशिया में, गेहूँ और जौ, मटर और कई तरह की दालों की फसलें उगाई जाती थीं। पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया में ज्वार-बाजरा और धान की फसलें आसानी से उगाई जा सकती थीं। ज्वार-बाजरा अफ़्रीका में पैदा किया जाता था। उन्हीं दिनों, लोगों ने भेड़-बकरी, ढोर, सूअर और गधा जैसे जानवरों को पालतू बनाना सीख लिया था। तब, पौधों से निकलने वाले रेशों, जैसे रूई तथा पटसन और पशुओं पर उगने वाले रेशों जैसे ऊन आदि से कपड़े बुने जाने लगे थे। कुछ समय बाद, आज से लगभग पाँच हज़ार साल पहले ढोरों और गधों जैसे पालतू जानवरों को हलों तथा गाड़ियों में जोता जाने लगा था।

इन घटनाक्रमों के फलस्वरूप और भी अनेक परिवर्तन हुए। जब लोग फसलें उगाने लगे तो उन्हें एक ही स्थान पर तब तक रहना पड़ता था जब तक कि उनकी उगाई हुई फसल पक न जाए। इसलिए एक स्थान पर बसकर रहना आम बात हो गई और इसके फलस्वरूप, लोग अपने रहने के लिए अधिक स्थायी घर बनाने लगे।

इसी बीच कुछ जन-समुदायों ने मिट्टी के बर्तन बनाना भी सीख लिया। अनाज और अन्य उपज इकट्ठी करने के लिए और नए उगाए गए अनाजों से तरह-तरह के भोजन बनाने के लिए इन बर्तनों का इस्तेमाल किया जाने लगा। वस्तुतः खाद्य पदार्थों को अधिक स्वादिष्ट और सुपाच्य बनाने के लिए, भोजन बनाने की प्रक्रिया पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

साथ ही, पत्थर के औज़ार बनाने के तरीकों में भी बदलाव आया। हालाँकि औज़ार बनाने के पहले वाले तरीके भी चालू रहे पर कुछ औज़ारों तथा उपकरणों को, घिसाई की विशद प्रक्रिया के ज़रिये, चिकना और पॉलिशदार बनाया जाने लगा। अनेक नए उपकरण बनाए गए; जैसे - अनाज की पिसाई और सफाई करने के लिए ओखली व मूसल और पत्थर की कुल्हाड़ी, कसिया और फावड़ा जिनसे जुताई के लिए भूमि साफ की जाती थी और बीज बोने के लिए खुदाई की जाती थी।

कुछ इलाकों में, लोग ताँबा और टिन (राँगा) जैसी धातुओं के खनिजों का उपयोग करना सीख गए। कभी-कभी, ताँबे के खनिजों को इकट्ठा करके उनके खास नीले, हरे रंग की वजह से उनका इस्तेमाल किया जाता था। इससे आगे चलकर धातुओं से गहने और औज़ार बनाने का रास्ता खुल गया।

दूरस्थ स्थानों (और समुद्रों) से उत्पन्न होने वाली कुछ अन्य प्रकार की चीज़ों के बारे में भी जानकारी बढ़ती जा रही थी। ये चीज़ें थीं: लकड़ी, पत्थर, हीरे-जवाहरात, धातुएँ, सीपियाँ और ऑब्सीडियन (ज्वालामुखी का पक्का जमा हुआ लावा)। स्पष्टतः लोग इन चीज़ों और इनके बारे में अपनी जानकारी के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहते थे और उनका प्रसार करते रहते थे।

इस प्रकार व्यापार में वृद्धि होती गई, गाँवों और कस्बों का विकास होता गया और लोगों का आवागमन बढ़ता गया, जिसके फलस्वरूप पुराने छोटे-छोटे जन-समुदायों के स्थान पर छोटे-छोटे राज्य विकसित हो गए। यद्यपि ये परिवर्तन बहुत धीमी गति से हुए और इस प्रक्रिया में कई हज़ार वर्ष लग गए, लेकिन जब शहर स्थापित हो गए और उनका विकास होने लगा तो इन परिवर्तनों की रफ़्तार भी तेज़ हो गई। इसके अलावा, इन परिवर्तनों के दूरगामी परिणाम निकले। कुछ विद्वानों ने तो इसे 'क्रांति' कहकर पुकारा, क्योंकि लोगों के जीवन में संभवतः इतना अधिक परिवर्तन आ गया था कि उन्हें पहचानना ही मुश्किल हो गया था। जब आप आरंभिक इतिहास में इन दो विपरीत विषयों का अन्वेषण करें तो इन निरंतरताओं और परिवर्तनों का अवश्य अवलोकन करें।

यह भी याद रखें कि हमने प्रारंभिक समाजों में से कुछ को ही उदाहरण के तौर पर विस्तृत अध्ययन के लिए चुना है। इनके अलावा, और भी कई प्रकार के प्रारंभिक समाज थे; जैसे — किसान समुदाय और पशुचारक यानी ग्वाले लोग, शिकारी-संग्राहक समुदाय और नगरवासी लोग।

कालक्रम एक

(6 लाख वर्ष पूर्व से 1 ई.पू.)

यह कालक्रम मानव के उदय, पौधों और पशुओं के बसने की प्रक्रिया (domestication) के बारे में प्रकाश डालता है। यहाँ पर कुछ प्रमुख प्रौद्योगिक विकासों; जैसे- आग का आविष्कार, धातुओं के प्रयोग, हल द्वारा खेती तथा पहिए या चाक के प्रयोग के बारे में जानकारी मिलती है। इस प्रक्रिया में नगरों का आविर्भाव और लेखन के प्रयोग के बारे में भी बताया गया है। आपको यहाँ पर कुछ प्राचीनतम साम्राज्यों का भी उल्लेख मिलेगा जिनकी विषय-वस्तु विस्तार से कालक्रम दो में दी जाएगी।

कालक्रम का अध्ययन कैसे करें

आप इस प्रकार का कालक्रम पुस्तक के प्रत्येक अनुभाग (section) में पाएँगे।

प्रत्येक कालक्रम आपको विश्व इतिहास की प्रमुख प्रक्रियाओं और घटनाओं के बारे में बताएगा।

जब आप इन कालक्रमों का अध्ययन कर रहे हों तो यह ध्यान रखें—

- राजाओं के बीच लड़े गये युद्धों की अपेक्षा उन प्रक्रियाओं या घटनाओं, जिनके द्वारा सामान्य स्त्रियों और पुरुषों ने इतिहास को प्रभावित किया, की तिथियों को अंकित करना अधिक कठिन है।
- कुछ तिथियाँ किसी प्रक्रिया के आरंभ या उसकी परिपक्व अवस्था को दर्शाती हैं।
- इतिहासकार लगातार नए-नए साक्ष्यों के आधार पर तिथियों में संशोधन कर रहे हैं या पुरानी तिथियों के निर्धारण के लिए नए तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं।
- यद्यपि हमने कालक्रम को सुविधा की दृष्टि से भौगोलिक आधार पर बाँटा है पर वास्तविक ऐतिहासिक विकास प्राय: इन सीमाओं के पार जाते हैं।
- ऐतिहासिक प्रक्रियाओं में काल-अनुक्रम प्राय: ऊपर-नीचे या अतिव्यापित (overlapping) हो जाता है।
- मानव इतिहास की कुछ युगांतरकारी घटनाओं को ही यहाँ दिया गया है- इनकी प्रक्रियाओं का वर्णन आने वाले अध्यायों में किया गया है जिनके पृथक कालक्रम भी हैं।
- जहाँ पर आप एक* देखेंगे वहाँ पर आपको एक चित्र दिखाई देगा जो कि खाने में लिखी तिथि से संबंधित है।
- कालक्रमों में दिए गए खाली खानों का यह अर्थ नहीं है कि उस काल में कुछ भी विशेष घटित नहीं हुआ - कभी-कभी यह हमें बताता है कि हमें अभी तक यह पता नहीं है कि उस काल में क्या घटित हुआ।
- अगले वर्ष हम दक्षिण एशिया के इतिहास और विशेष रूप से भारतीय इतिहास का अध्ययन करेंगे। दक्षिण एशिया के बारे में दी गई तिथियाँ उस उपमहाद्वीप में हुए केवल कुछ विकासों को ही दर्शाती हैं।

तिथि	अफ़्रीका	यूरोप
6 लाख वर्ष पूर्व- 500,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व	*आस्ट्रेलोपिथिकस* के जीवाश्म (वर्तमान से 56 लाख वर्ष पूर्व अग्नि के प्रयोग के साक्ष्य मिले (वर्तमान से 14 लाख वर्ष पूर्व)	
500,000-150,000 वर्तमान से पूर्व	प्राज्ञ मानव (होमो सैपियंस) के जीवाश्म (195,000 वर्तमान से पूर्व)	अग्नि के प्रयोग के साक्ष्य (400,000 वर्तमान से पूर्व)
150,000-50,000 वर्तमान से पूर्व		
50,000-30,000		प्राज्ञ मानव (होमो सैपियंस) के जीवाश्म (40,000)
30,000-10,000	गुफाओं/गुफा आवासों में चित्रकारी (27,500)	गुफाओं/गुफा आवासों में चित्रकारी (विशेषकर फ्रांस और स्पेन में)
8000-7000 ई.पू.		
7000-6000	पशुओं और कुत्तों को पालतू बनाया गया	
6000-5000		गेहूँ और जौ की खेती (यूनान)
5000-4000		
4000-3000	गधे को पालतू बनाया गया, ज्वार-बाजरा आदि की खेती, ताँबे का प्रयोग	ताँबे का प्रयोग (क्रीट)
3000-2000	हल द्वारा कृषि, प्रथम राजवंशों, नगरों, पिरामिडों, कैलेंडर, चित्रात्मक लिपि*, पैपाइरस पर लेखन (मिस्र)	घोड़े को पालतू बनाया गया (पूर्वी यूरोप)
2000-1900		नगरों, महलों, काँसे का प्रयोग, कुम्हार के चाक, व्यापार का विकास (क्रीट)
1900-1800		
1800-1700		
1700-1600		लिपि का विकास (क्रीट)*
1600-1500		
1500-1400	काँच की बोतलों का प्रयोग (मिस्र)	
1400-1300		
1300-1200		
1200-1100		
1100-1000		लोहे का प्रयोग हुआ
1000-900		
900-800	पश्चिम एशिया के फोनिशियनों ने उत्तरी अफ़्रीका में कार्थेज नगर की स्थापना की; भूमध्यसागरीय क्षेत्र में व्यापार का विस्तार	
800-700	लोहे का प्रयोग (सूडान)	प्रथम ओलंपिक खेल (यूनान 776 ई.पू.)
700-600	लोहे का प्रयोग (मिस्र)	
600-500		सिक्कों का प्रयोग* (यूनान); रोम गणराज्य की स्थापना (510 ई.पू.)
500-400	फ़ारसियों का मिस्र पर आक्रमण	एथेन्स में 'प्रजातंत्र' की स्थापना (यूनान)
400-300	मिस्र में सिकंदरिया (Alexandria) की स्थापना (332 ई.पू.) जो ज्ञान का प्रमुख केन्द्र बना	मकदूनिया (Macedonia) के सिकंदर ने मिस्र और पश्चिम एशिया के भागों को जीता (336-323 ई.पू.)
300-200		
200-100		
100-1 ई.पू.		

तिथि	एशिया	दक्षिण एशिया
6 लाख-500,000 वर्तमान से पूर्व	अग्नि का प्रयोग (700,000 वर्तमान से पूर्व, चीन)	रिवात में पाषाणकालीन स्थल (1,900,000 वर्तमान से पूर्व, पाकिस्तान)
500,000-150,000 वर्तमान से पूर्व		
150,000-50,000 वर्तमान से पूर्व	प्राज्ञ मानव (होमो सैपियंस) के जीवाश्म (100,000 वर्तमान से पूर्व, पश्चिम एशिया)	
50,000-30,000 वर्तमान से पूर्व		
30,000-10,000 वर्तमान से पूर्व	कुत्ते को पालतू बनाया गया (14,000, पश्चिम एशिया)	भीमबैटका के गुफा चित्र (मध्य-प्रदेश); होमो सैपियंस के जीवाश्म (25,500 वर्तमान से पूर्व, श्रीलंका)
8000-7000 ई.पू.	भेड़ और बकरियों को पालतू बनाया गया, गेहूँ और जौ की खेती (पश्चिम एशिया)	
7000-6000	सूअर और पशुओं को पालतू बनाया (पश्चिम और पूर्व एशिया)	प्रारंभिक कृषि-बस्तियाँ (बलूचिस्तान)
6000-5000	कुक्कुट-पालन, ज्वार-बाजरा तथा अरबी (yam) की खेती (पूर्वी एशिया)	
5000-4000	कपास की खेती (दक्षिण एशिया); ताँबे का प्रयोग (पश्चिम एशिया)	
4000-3000	कुम्हार के चाक का प्रयोग, यातायात के लिए पहिए का प्रयोग (3600 ई.पू.), लेखन का प्रयोग (3200 ई.पू., मेसोपोटामिया), काँसे का प्रयोग	ताँबे का प्रयोग
3000-2000	हल कृषि, नगर (मेसोपोटामिया); सिल्क का प्रयोग (चीन); घोड़े को पालतू बनाया गया (मध्य एशिया); चावल की खेती (दक्षिण-पूर्व एशिया)	हड़प्पाकालीन संस्कृति के नगर, लिपि* का प्रयोग (लगभग 2700 ई.पू.)
2000-1900	खास पानी में रहने वाली भैंस को पालतू बनाया गया (पूर्वी एशिया)	
1900-1800		
1800-1700		
1700-1600		
1600-1500	नगरों, लेखन, राज्यों (शांग राजवंश), काँसे का प्रयोग हुआ (चीन)*	
1500-1400	लोहे का प्रयोग हुआ (पश्चिम एशिया)	ऋग्वेद की रचना
1400-1300		
1300-1200		
1200-1100		लोहे का प्रयोग, महापाषाण (megaliths) (दकन और दक्षिण भारत)
1100-1000	एक कोहान वाले ऊँट को पालतू बनाया (अरब)	
1000-900		
900-800		
800-700		
700-600		
600-500	सिक्कों का प्रयोग (तुर्की); फारसी साम्राज्य (546 ई.पू.) जिसकी राजधानी पर्सिपोलिस थी; चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस (लगभग 551 ई.पू.)	अनेक क्षेत्रों में नगरों और राज्यों की स्थापना, पहली बार सिक्कों का प्रयोग, जैन और बौद्ध धर्म का प्रसार
500-400		
400-300		मौर्य साम्राज्य की स्थापना (लगभग 321 ई.पू.)
300-200	चीन में एक साम्राज्य की स्थापना (221 ई.पू.), चीन की विशाल दीवार के निर्माण-कार्य का प्रारंभ	
200-100		
100-1 ई.पू.		

तिथि	अमरीका	आस्ट्रेलिया/प्रशान्त महासागरीय द्वीप
6 लाख-500,000 वर्तमान से पूर्व		
500,000-150,000 वर्तमान से पूर्व		
150,000-50,000 वर्तमान से पूर्व		
50,000-30,000 वर्तमान से पूर्व		प्राज्ञ मानव (होमो सैपियंस) के जीवाश्म, समुद्र-यात्रा के प्राचीनतम संकेत (45,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व)
30,000-10,000 वर्तमान से पूर्व	होमो सैपियंस के जीवाश्म (12,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व)	चित्रकला (20,000 वर्ष वर्तमान से पूर्व)
8000-7000 ई.पू.		
7000-6000	कुम्हड़ा (Squash) की खेती	
6000-5000		
5000-4000	सेम की खेती	
4000-3000	कपास और लौकी की खेती	
3000-2000	गिनि पिग, टर्की को पालतू बनाया, मक्के की खेती	
2000-1900	आलू, मिर्च*, कैसावा, मूँगफली की खेती, लामा* और ऐल्पेका को पालतू बनाया	
1900-1800		
1800-1700		
1700-1600		
1600-1500		
1500-1400		
1400-1300		
1300-1200		
1200-1100	मैक्सिको खाड़ी के चारों और ओल्मेक लोगों की बस्तियाँ, प्रारंभिक मंदिर और मूर्ति-शिल्प	पोलिनेशिया और माइक्रोनेशिया में बस्तियाँ
1100-1000		
1000-900	चित्रात्मक लिपि का विकास	
900-800		
800-700		
700-600		
600-500		
500-400		
400-300		
300-200		
200-100		
100-1 ई.पू.		

क्रियाकलाप

प्रत्येक छह खानों से एक तिथि को लीजिए और उस क्षेत्र में रहने वाले पुरुषों और स्त्रियों के लिए उस तिथि की प्रक्रिया/घटना का क्या महत्त्व रहा होगा, इस पर विचार-विमर्श कीजिए।